



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित बेरोजगारी की समस्याएँ

प्रा. डॉ. प्रकाश शेट्टे

हिंदी विभाग प्रमुख,

बाबुराव पाटील कला व विज्ञान महाविद्यालय अनगर, तह. मोहोल जि. सोलापुर.

Manuscript ID:

IJAAR-C130360

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 304 - 309

Submitted: 05 Feb. 2026

Revised: 12 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. डॉ. प्रकाश शेट्टे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786955

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786955>



Creative Commons



सार:

बेरोजगारी एक वैश्विक समस्या है, लेकिन भारत जैसे विकासशील देश में यह सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर गहरा प्रभाव डालती है। 21वीं सदी में भारत की युवा आबादी विश्व में सबसे बड़ी है, फिर भी बेरोजगारी दर उच्च स्तर पर बनी हुई है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की रिपोर्ट के अनुसार, 2022 में भारत में युवा बेरोजगारी दर 12.1% थी, जो 2019 में 17.5% से घटकर आई, लेकिन शिक्षित युवाओं में यह दर 18.4% से अधिक है। 2024 में ILO की रिपोर्ट में स्नातक युवाओं में बेरोजगारी दर 29.1% बताई गई है, जो अनपढ़ों से नौ गुना अधिक है। महिलाओं में यह समस्या अधिक गंभीर है, क्योंकि 48.4% युवा महिलाएँ रोजगार, शिक्षा या प्रशिक्षण से बाहर हैं। 2025 में MoSPI PLFS के आंकड़ों के अनुसार, भारत में बेरोजगारी दर वर्तमान में 5.1% है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में 4.5% और शहरी क्षेत्रों में 6.5% है। युवा बेरोजगारी दर 13.8% है। 2026 में वैश्विक स्तर पर 18.6 करोड़ लोगों के बेरोजगार रहने का अनुमान है, जिसमें भारत का हिस्सा महत्वपूर्ण है। यह समस्या न केवल आर्थिक असमानता बढ़ाती है, बल्कि अपराध, मानसिक स्वास्थ्य संकट और सामाजिक अस्थिरता को जन्म देती है। हिंदी साहित्य और सिनेमा, जो समाज का दर्पण माने जाते हैं, ने इस समस्या को विविध रूपों में चित्रित किया है। यह शोध पत्र 21वीं सदी के हिंदी साहित्य (उपन्यास, कविता, कहानी) और सिनेमा में बेरोजगारी के चित्रण का विश्लेषण करता है, साथ ही इसके सामाजिक प्रभावों पर प्रकाश डालता है। साहित्य में बेरोजगारी को व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक संघर्ष के रूप में दर्शाया गया है, जबकि सिनेमा में इसे व्यंग्य, हास्य या सामाजिक टिप्पणी के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इस पत्र में हम देखेंगे कि कैसे ये माध्यम समाज को जागरूक करते हैं और समाधान की दिशा में योगदान देते हैं।

मुख्य शब्द: बेरोजगारी, युवा निराशा, मनोजगत, सामाजिक असमानता, आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण, शहरी-ग्रामीण विभाजन, मनोवैज्ञानिक संघर्ष, व्यंग्य, अपराधीकरण, रोजगार संकट, NEET युवा, LFPR, PLFS, ILO रिपोर्ट, अंतर्द्वंद्व, आत्म-निर्वासन, सामाजिक विघटन, यथार्थवाद, स्त्री विमर्श, मजदूर वर्ग, पलायन, कुंठा, असंतोष, बाजारवाद, राजनीतिक विफलता, दलित-नारी समस्या, युवा विद्रोह, आर्थिक पीड़ा।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. डॉ. प्रकाश शेट्टे. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित बेरोजगारी की समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 304 - 309. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786955>



प्रस्तावना:

21वीं सदी का भारत आर्थिक विकास की ऊँचाइयों को छू रहा है, लेकिन बेरोजगारी की समस्या एक काला साया बनकर समाज को प्रभावित कर रही है। आर्थिक उदारीकरण के बाद से बाजार में बदलाव आए, लेकिन रोजगार सृजन की गति आबादी के अनुपात में नहीं बढ़ी। युवा वर्ग, जो देश की 83% बेरोजगार आबादी का प्रतिनिधित्व करता है, निराशा और असंतोष से घिरा हुआ है। ILO की 2024 रिपोर्ट के अनुसार, युवा बेरोजगारी दर 12.4% तक पहुँच गई है। 2025 में शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी दर 6.7% रही, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में 4%। 2026 में वैश्विक बेरोजगारी दर 4.9% रहने की संभावना है। इस संदर्भ में हिंदी साहित्य और सिनेमा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साहित्य में बेरोजगारी को व्यक्तिगत संघर्ष के रूप में चित्रित किया जाता है, जबकि सिनेमा में इसे सामाजिक व्यंग्य या नाटकीयता के माध्यम से दिखाया जाता है। हिंदी साहित्य में बेरोजगारी को सामाजिक यथार्थ के रूप में दर्शाया गया है, जहां लेखक इसे युवाओं के मनोवैज्ञानिक संघर्ष, सामाजिक असमानता और व्यवस्था की विफलता से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, 21वीं सदी के उपन्यासों में जैसे अखिलेश का 'अन्वेषण' बेरोजगार युवा के मनोजगत को दर्शाता है। इसी प्रकार, कविताओं में केशव तिवारी की 'बेरोजगारी में इश्क' बेरोजगारी को प्रेम और सपनों के टूटने से जोड़ती है। सिनेमा में 'हेरा फेरी' (2000) बेरोजगारी को हास्य के माध्यम से चित्रित करती है। इस पत्र में हम देखेंगे कि कैसे लेखक और फिल्मकार इस समस्या को उठाते हैं, और इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है। साहित्य और सिनेमा दोनों माध्यम बेरोजगारी को युवा निराशा के रूप में दिखाते हैं, लेकिन साहित्य मनोवैज्ञानिक गहराई देता है, जबकि सिनेमा दृश्य प्रभाव। इस विश्लेषण से

स्पष्ट होगा कि ये माध्यम समाज को जागरूक करने में कैसे योगदान देते हैं।

भारत में बेरोजगारी की समस्या और उसके सामाजिक प्रभाव:

भारत में बेरोजगारी की जड़ें गहरी हैं। मुख्य कारणों में जनसंख्या वृद्धि, शिक्षा और कौशल का अभाव, औद्योगीकरण की धीमी गति और तकनीकी परिवर्तन शामिल हैं। 21वीं सदी में डिजिटलीकरण और ऑटोमेशन ने पारंपरिक नौकरियों को कम किया है, जबकि शिक्षित युवाओं की संख्या बढ़ी है। ILO की 2024 रिपोर्ट के अनुसार, स्नातक युवाओं में बेरोजगारी दर 29.1% है, जो अनपढ़ों से नौ गुना अधिक है। महिलाओं में यह समस्या अधिक गंभीर है, क्योंकि 48.4% युवा महिलाएँ रोजगार, शिक्षा या प्रशिक्षण से बाहर हैं। 2025 में PLFS के अनुसार, समग्र बेरोजगारी दर 5.1% है, युवा दर 13.8%। 2026 में ILO रिपोर्ट में युवा बेरोजगारी 12.4% बताई गई है। अक्टूबर-दिसंबर 2025 में बेरोजगारी दर घटी, लेकिन शहरी क्षेत्रों में 6.7% रही। दिसंबर 2025 में बेरोजगारी दर 4.8% पर रही।

सामाजिक प्रभावों की बात करें तो बेरोजगारी गरीबी, अपराध और सामाजिक विघटन को बढ़ावा देती है। युवाओं में असंतोष बढ़ता है, जो राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक आंदोलनों को जन्म देता है। मानसिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव गहरा है – अवसाद, आत्महत्या और पारिवारिक कलह बढ़ते हैं। उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षित युवा बेरोजगार पुरुषों में मर्दानगी का संकट देखा जाता है, जो सामाजिक दबाव बढ़ाता है। आर्थिक रूप से, यह असमानता को गहराता है, क्योंकि अमीरों और गरीबों के बीच खाई बढ़ती है। वैश्वीकरण ने कुछ क्षेत्रों में अवसर बढ़ाए, लेकिन ग्रामीण युवाओं के पलायन



को भी प्रोत्साहित किया, जिससे परिवार विघटित होते हैं। 2024 में ILO रिपोर्ट में युवा रोजगार संकट गहराने की बात कही गई है, जिसमें 260 मिलियन युवा NEET हैं। बेरोजगारी से सामाजिक संरचना प्रभावित होती है, जैसे जाति और लिंग आधारित असमानताएँ बढ़ती हैं। राज्यवार, हरियाणा में 37.4% बेरोजगारी दर सबसे अधिक है। बेरोजगारी से अपराध दर बढ़ती है, जैसे शहरी क्षेत्रों में युवा अपराध। मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षणों में बेरोजगार युवाओं में अवसाद 40% अधिक पाया गया है। परिवारों में कलह बढ़ती है, क्योंकि आर्थिक दबाव संबंधों को तोड़ता है। सामाजिक आंदोलन जैसे किसान आंदोलन या युवा विरोध प्रदर्शन बेरोजगारी से जुड़े हैं। वैश्विक स्तर पर, 2026 में 18.6 करोड़ बेरोजगार रहने का अनुमान है, जिसमें भारत का योगदान बड़ा है।

हिंदी साहित्य में बेरोजगारी का चित्रण:

21वीं सदी का हिंदी साहित्य बेरोजगारी को सामाजिक यथार्थ के रूप में चित्रित करता है। लेखक इसे युवाओं के मनोवैज्ञानिक संघर्ष, सामाजिक असमानता और व्यवस्था की विफलता से जोड़ते हैं। साहित्य में बेरोजगारी को युवा ऊर्जा के दमन, निराशा और सामाजिक संकट के रूप में दिखाया गया है।

उपन्यासों में चित्रण:

अखिलेश का उपन्यास 'अन्वेषण' (2000 के बाद) बेरोजगार युवा के मनोजगत को दर्शाता है। नायक एक शिक्षित युवा है, जो व्यवस्था की मार से कुचला जाता है, लेकिन मुक्ति की छटपटाहट नहीं छोड़ता। यह उपन्यास बेरोजगारी को युवा ऊर्जा के दमन के रूप में दिखाता है, जहाँ युवा उमंग की जगह निराशा ले लेती है। सूर्यबाला के कथा साहित्य में बेरोजगार

युवाओं की आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ प्रमुख हैं। वह बेरोजगारी को समाज का कलंक बताती हैं, जो परिवार की आर्थिक स्थिति बिगाड़ती है। मजदूर वर्ग पर केंद्रित उपन्यासों में 21वीं सदी के लेखक जैसे अलका सरावगी और अन्य गरीबी, शोषण और बेरोजगारी को जोड़ते हैं। ग्रामीण पलायन और विस्थापन पर आधारित उपन्यास बेरोजगारी को आर्थिक मजबूरी के रूप में चित्रित करते हैं। 21वीं सदी के दूसरे दशक के हिंदी उपन्यासों में बेरोजगारी को वैश्वीकरण और बाजारवाद से जोड़ा गया है। इक्कीसवीं सदी में सांस्कृतिक विस्थापन और समकालीन हिंदी उपन्यास में बेरोजगारी को सामाजिक विस्थापन के रूप में दिखाया गया है। इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय बोध में बेरोजगारी शहरी जीवन की पीड़ा के रूप में उभरती है। इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन में बेरोजगारी पीढ़ीगत संघर्ष के रूप में दिखाई गई है। सामयिक चुनौतियों के संदर्भ में नई सदी के हिंदी उपन्यास में बेरोजगारी को आर्थिक उदारीकरण की देन बताया गया है। इक्कीसवीं सदी का हिन्दी उपन्यास में आदिवासी जीवन में बेरोजगारी को विकास की कीमत के रूप में चित्रित किया गया है। 21वीं सदी के हिन्दी साहित्य में चित्रित मानवीय संवेदना में बेरोजगारी भावनात्मक पीड़ा के रूप में है। इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यास : विविध विमर्श में बेरोजगारी को युवा विमर्श के भाग के रूप में देखा गया है। “२१वीं सदी के प्रमुख हिंदी उपन्यासों में चित्रित मजदूर वर्ग ” में बेरोजगारी मजदूर जीवन की समस्या है। नीतिहीन राजनीति व असभ्य समाज के यथार्थ का सार: 21वीं सदी के उपन्यास में बेरोजगारी राजनीतिक विफलता है। 21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य में बेरोजगारी नारी विमर्श से जुड़ी है। इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक का हिंदी साहित्य में बेरोजगारी आर्थिक पीड़ा है। अमित कुमार विश्वास के अनुसार वैश्वीकरण



और हिंदी की चुनौतियाँ में बेरोजगारी भाषा से जुड़ी है। 21 Vin shatabdi ke pramukh hindi upnyason me kisan jeewan में बेरोजगारी किसान जीवन की समस्या है। 21वीं सदी के संदर्भ में प्रेमचंद की नारी और दलित अस्मिता का अध्ययन में बेरोजगारी दलित समस्या है।

कविता में चित्रण:

हिंदी कविता में बेरोजगारी को भावनात्मक रूप से व्यक्त किया गया है। हिंदवी पर संकलित कविताएँ जैसे केशव तिवारी की 'बेरोजगारी में इश्क', अनुराग अनंत की 'बेरोजगारों को इश्क करना चाहिए' बेरोजगारी को युवा प्रेम और सपनों के टूटने से जोड़ती हैं। कुमार अम्बुज और अन्य कवियों की रचनाएँ बेरोजगारी को सामाजिक संकट के रूप में देखती हैं। 21वीं सदी की कविता में अंधकार और असंतोष प्रमुख है, जो युवा निराशा को प्रतिबिंबित करती है। समकालीन हिन्दी कविता में मानव मूल्य में बेरोजगारी नैतिक पतन का कारण है। इक्कीसवीं सदी की कविता में संवेदना के तेवर में बेरोजगारी वैचारिक संघर्ष है। समकालीन हिंदी कविता में आर्थिक पीड़ा से जूझता आम आदमी में बेरोजगारी आर्थिक असमानता है। 20वीं-21वीं सदी के संधिदशक की हिंदी कविता: विविध परिदृश्य में बेरोजगारी स्त्री कविता में है। २१ वीं सदी की हिंदी गज़लों में अभिव्यक्त आर्थिक च में बेरोजगारी आर्थिक चेतना है। 21वीं सदी की हिन्दी कविता में परिवेश में बेरोजगारी सामाजिक विषमता है। 21 वी सदी की चुनौतियाँ और साहित्य-सृजन में बेरोजगारी चुनौती है। 21वीं सदी की कविता: 25 साल, 75 रचनाओं का दस्तावेज में बेरोजगारी सामाजिक हलचल है। Dhananjay की 21वीं सदी का भारतीय परिप्रेक्ष्य और हिंदी कविता में बेरोजगारी युवा विद्रोह है। नयी इबारत

लिखते समकालीन कविता के युवा स्वर में बेरोजगारी पलायन है।

कहानियों और अन्य विधाओं में:

समकालीन हिंदी कहानियाँ बेरोजगारी को शहरी-ग्रामीण विभाजन से जोड़ती हैं। युवा लेखक जैसे अविनाश मिश्र और अन्य बेरोजगारी को जाति, लिंग और क्षेत्रीय असमानता से जोड़ते हैं। यह चित्रण दिखाता है कि बेरोजगारी न केवल आर्थिक, बल्कि सामाजिक अन्याय का प्रतीक है। 21वीं सदी की कहानी: संवेदना और स्वरूप में बेरोजगारी सामाजिक परिदृश्य है।

हिंदी सिनेमा में बेरोजगारी का चित्रण:

हिंदी सिनेमा में बेरोजगारी को व्यंग्य, नाटक और सामाजिक टिप्पणी के रूप में दिखाया जाता है। 21वीं सदी में फिल्में युवा संघर्ष को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करती हैं।

प्रमुख फिल्में:

'हेरा फेरी' (2000) बेरोजगारी को हास्य के माध्यम से चित्रित करती है, जहाँ तीन बेरोजगार युवा धन कमाने के चक्कर में पड़ते हैं। 'रॉकेट सिंह: सेल्समैन ऑफ द ईयर' (2009) एक स्नातक युवा के संघर्ष को दिखाती है, जो नौकरी की तलाश में नैतिकता और महत्वाकांक्षा के बीच फँसता है। 'अरे यार' (हिंदी शॉर्ट फिल्म) बेरोजगारी के जीवन परिवर्तन को दर्शाती है। 'जॉबलेस' (शॉर्ट फिल्म) मध्यम वर्गीय युवा के संघर्ष को दिखाती है। 'अनारी' (1959 से प्रेरित, लेकिन 21वीं सदी की रीमेक में) बेरोजगारी और गरीबी को सामाजिक टिप्पणी बनाती है। 'दीवार' (1975) की परंपरा में 21वीं सदी की फिल्में जैसे 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' (2012) बेरोजगारी को अपराध से



जोड़ती हैं। 'ईब आले ऊ' (2020) बिहार से दिल्ली आए युवक की बेरोजगारी की कहानी है। 'धर्मा द वॉरियर' बेरोजगारी से अपराध की ओर मुड़ने को दिखाती है। 21वीं सदी के हिंदी सिनेमा में स्त्री-प्रतिरोध की अनुगूँज में बेरोजगारी स्त्री संघर्ष है। 'लज्जा' बेरोजगारी और सामाजिक सरोकार को जोड़ती है।

सामाजिक संदर्भ:

सिनेमा में बेरोजगारी को अक्सर 'एंग्री यंग मैन' की छवि से जोड़ा जाता है, जो 1970s से चली आ रही है। 21वीं सदी में फिल्में जैसे 'पैडमैन' और 'टूवेल्थ फेल' बेरोजगारी से निकलकर सफलता की कहानी दिखाती हैं, लेकिन समस्या की गहराई को छूती हैं। युवाओं के मुद्दों पर केंद्रित फिल्में समलैंगिकता, लिव-इन और बेरोजगारी को जोड़ती हैं।

तुलनात्मक विश्लेषण:

साहित्य और सिनेमा दोनों में बेरोजगारी को युवा निराशा के रूप में दिखाया जाता है, लेकिन साहित्य मनोवैज्ञानिक गहराई देता है, जबकि सिनेमा दृश्य प्रभाव। साहित्य में जैसे 'अन्वेषण' में व्यक्तिगत संघर्ष है, वैसे सिनेमा में 'रॉकेट सिंह' में व्यावसायिक संघर्ष। दोनों माध्यम सामाजिक असमानता पर टिप्पणी करते हैं, लेकिन सिनेमा व्यावसायिकता के कारण हास्य या नाटक जोड़ता है। हिंदी साहित्य और सिनेमा का संबंध में साहित्य सिनेमा का आधार है। साहित्य और सिनेमा का अंतर्संबंध में बेरोजगारी सामाजिक दर्पण है। साहित्य और सिनेमा का सामाजिक संबंध में बेरोजगारी समाज को प्रतिबिंबित करती है।

निष्कर्ष:

21वीं सदी में हिंदी साहित्य और सिनेमा बेरोजगारी को प्रभावी ढंग से चित्रित करते हैं, जो समाज को जागरूक करते हैं। नीतिगत बदलाव, कौशल विकास और उद्यमिता से समस्या का समाधान संभव है। साहित्य और सिनेमा की भूमिका जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण है।

संदर्भ (References):

1. अखिलेश. (1992). *अन्वेषण*. (उपन्यास)। राजकमल प्रकाशन। (बेरोजगार युवा के मनोजगत का मार्मिक चित्रण, जिसे 'बेरोजगारी का मार्मिक आख्यान' कहा गया है।)
2. नाथ, बर्नाली. (2021). शोध: बेरोजगार युवा का मनोजगत (अखिलेश के 'अन्वेषण' उपन्यास के संदर्भ में). अपनी माटी. https://www.apnimaati.com/2021/07/blog-post_97.html
3. गोहे, रमेश कुमार. (2023). 21वीं सदी की कहानी: संवेदना और स्वरूप. हिंदी जर्नल. <https://www.hindijournal.com/assets/archive/s/2023/vol9issue3/9045-1683962103922.pdf>
4. शाही, विनोद. (2020). 21वीं सदी की हिंदी कहानी का स्वरूप. समालोचन. <https://samalochan.blogspot.com/2020/12/21.html>
5. विश्वास, अमित कुमार. वैश्वीकरण और हिंदी की चुनौतियाँ. हिंदिसमय. <https://www.hindisamay.com/content/10793/1/...>



6. सरावगी, अलका. एक ब्रेक के बाद. (उपन्यास, सांस्कृतिक विस्थापन और बेरोजगारी के संदर्भ में।)
7. तिवारी, विश्वनाथ. (संकलन). 21वीं सदी की हिन्दी कविता. आलोचना मैगज़ीन. <https://aalochanamagazine.com/aalochana-kavita-visheshank-1>
8. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO). (2024). *World Employment and Social Outlook: Trends 2024*. ILO Publications. (स्नातक युवाओं में 29.1% बेरोजगारी दर, NEET युवाओं का उल्लेख।)
9. मंत्रालय ऑफ स्टैटिस्टिक्स एंड प्रोग्राम इम्प्लीमेंटेशन (MoSPI). (2025-2026). *Periodic Labour Force Survey (PLFS) Quarterly Bulletin*. National Statistics Office. (अक्टूबर-दिसंबर 2025 में UR 4.8%, LFPR 55.8%, ग्रामीण 4%, शहरी 6.7%।)
10. MoSPI. (2026). PLFS डेटा: Unemployment rate at 4.8% in Oct-Dec 2025. *The Indian Express*. <https://indianexpress.com/article/business/unemployment-october-december-salaried-jobs-down-10525066>
11. ILO. (2026). Global unemployment projections: 18.6 करोड़ बेरोजगार। *Business Standard* तथा अन्य रिपोर्ट्स।
12. अमीन, शमित (निर्देशक). (2009). *रॉकेट सिंह: सेल्समैन ऑफ द ईयर*. Yash Raj Films. (बेरोजगार स्नातक युवा का व्यावसायिक संघर्ष।)
13. प्रियदर्शन (निर्देशक). (2000). *हेरा फेरी*. (बेरोजगार युवाओं का हास्यपूर्ण चित्रण।)
14. विभिन्न लेखक. (2021-2025). हिन्दी कविता संकलन: 'बेरोजगारी में इश्क' (केशव तिवारी), 'बेरोजगारों को इश्क करना चाहिए' (अनुराग अनंत)। हिंदवी तथा अन्य प्लेटफॉर्म।
15. प्रसाद, अन्य. (2020-2025). 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में मजदूर वर्ग, ग्रामीण पलायन, स्त्री विमर्श। *जनकृति, शब्द प्रवाह* आदि।
16. गोस्वामी, अन्य. (2025). Unemployment rate falls to 4.8% in Q3 FY26. *Business Standard*. https://www.business-standard.com/industry/news/indias-joblessness-at-three-quarter-low-in-q3-of-fy26-126021001765_1.html
17. PIB. (2026). Female LFPR and WPR recorded a yearly high in December 2025. Press Information Bureau. <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2214908>
18. *समकालीन हिन्दी कविता* संकलन. (2025). 21वीं सदी की कविता: 25 साल, 75 रचनाओं का दस्तावेज।
19. *इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास: विविध विमर्श*. विभिन्न शोध आलेख।
20. *The Hindu BusinessLine*. (2026). Unemployment rate declined in urban and rural India during Oct-Dec quarter.